

उड़ीसा में जनजातीय शिक्षा वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियाँ

अभय कुमार मिश्र*

मिनकेतन बेहेरा**

उड़ीसा में कुल आबादी का एक चौथाई भाग (22.85 प्रतिशत) जनजातीय है (2011 जनगणना, पृ. सं. 8)। शिक्षा को किसी देश की सामाजिक एवं आर्थिक विकास का इंजन माना गया है। शिक्षा जहाँ एक तरफ व्यक्ति के विचारों, व्यवहारों, आशा-आकांक्षाओं एवं समझ में परिवर्तन लाकर उसके जीवन जीने की स्थिति में बदलाव लाती है, वहीं दूसरी तरफ उसकी आजीविका, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता आदि व्यवहार में उन्नति करती है। उड़ीसा के जनजातीय लोगों की शिक्षा बहुत ही कम और दयनीय स्थिति में है, जो हमारे देश और उड़ीसा प्रदेश के शैक्षिक औसत से ही नहीं बल्कि भारत के अन्य जनजातीय वर्गों के शैक्षिक औसत से भी बहुत कम है। शोध लेख वर्तमान में उड़ीसा की जनजातीय शिक्षा की स्थिति एवं चुनौतियों का विश्लेषण करने के साथ-साथ उसके निदान हेतु सुझाव भी देता है।

शिक्षा गरीबी एवं बेरोज़गारी को घटाने के एक शक्तिशाली अस्त्र के रूप में काम कर सकती है इसके साथ ही स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर को भी बढ़ा सकती है एवं निरंतर मानवीय विकास को प्राप्त करने में मददगार हो सकती है (विश्व बैंक, 2004)। शिक्षा पर निवेश करना विश्व बैंक की सामाजिक विकास के उद्देश्यों को पूरा करने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है जो कि विकास में सम्मिलित विकास, सामाजिक एकजुटता एवं जवाबदेही का समर्थन करता है (सेन, 2007)। शैक्षिक एवं सामाजिक तौर पर उड़ीसा में जनजातीय लोग सबसे प्रतिकूल परिस्थिति में जीवन जी रहे हैं। पूरे भारत के जनजातीय मानचित्र में

उड़ीसा की एक अलग पहचान है। यहाँ कुल 62 प्रकार के जनजातीय लोग निवास करते हैं (अनुसूचित जाति एवं जनजातीय वार्षिक विवरणी 2019–20 पृ.सं.4)। प्रत्येक जनजाति एक दूसरे से भिन्न हैं। उड़ीसा में रहने वाले जनजातीय लोग की संख्या राज्य की पूरी आबादी का 22.85 प्रतिशत है एवं भारत की पूरी जनजातीय आबादी का 9.66 प्रतिशत उड़ीसा में रहता है। उड़ीसा के बाद मध्यप्रदेश 14.69 एवं महाराष्ट्र 10.8 प्रतिशत जनजातीय लोग निवास करते हैं (भारतीय जनगणना 2011)। प्रायः उड़ीसा के 93.8 प्रतिशत जनजातीय लोग ग्रामीण इलाके में रहते हैं जबकि भारत में इसकी कुल संख्या 90 प्रतिशत है।

*शिक्षक, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एम.सी.एल. आनंद विहार, बुर्ला, संबलपुर, उड़ीसा 768 020

**एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ़ सोशल साइंस, जवाहर नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली 110 067

ज्यादातर जनजातीय लोग जंगल एवं पहाड़ी इलाके में रहते हैं। इन लोगों में गरीबी (63.52) और अशिक्षा (47.76 प्रतिशत) विद्यमान है (इकोनोमिक सर्वे ऑफ़ उड़ीसा 2016-17 पृ. सं. 241) इसलिए सामाजिक असमानता एवं दूरियाँ ऐसे समाज में पर्याप्त मात्रा में व्याप्त हैं। स्वतंत्रता के बाद आज तक शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक वंचित एवं उपेक्षित जनजातीय लोगों के लिए कई कार्यक्रम और ठोस कदम लिए जा रहे हैं।

इस क्षेत्र में सरकार के लगातार प्रयासों के बावजूद जनजातीय लोगों की शैक्षिक विकास दर राज्य एवं देश की आवश्यकतानुसार पर्याप्त नहीं है। यह शोध प्रबंध उड़ीसा के साधारण जनसंख्या की तुलना में जनजातीय लोगों की शैक्षिक स्थिति में होने वाले परिवर्तन का परीक्षण करता है। इतना ही नहीं यह शोध शिक्षा के क्षेत्र में जनजातीय पुरुष-महिलाओं के अंतर की दर, स्कूल में कुल पंजीकृत अनुपात, विद्यालय छोड़ने का अनुपात, लैंगिक अनुरूपता आदि का विश्लेषण करेगा।

जनजातीय लोगों के निम्न शैक्षिक स्थिति व शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ेपन का कारण ढूँढ़कर उनके शिक्षा विकास के उपायों का अन्वेषण करना इस शोध प्रबंध का उद्देश्य है। इसमें द्वितीय आँकड़ों या सूचनाओं का प्रयोग किया गया है। इस लेख में

भारतीय जनगणना, विभिन्न सरकारी विभागों का वार्षिक विवरण, विविध किताबों एवं पत्रिकाओं से आँकड़ों को संगृहित किया गया है।

जनजातीय लोगों की शैक्षिक स्थिति

जनगणना 2011 के अनुसार भारत की साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है। जबकि उड़ीसा की साक्षरता दर 72.9 प्रतिशत है (इकोनोमिक सर्वे ऑफ़ उड़ीसा 2016-17 पृ.सं. 8)। उड़ीसा के जनजातीय लोगों की साक्षरता दर एक चिंता का विषय बन गया क्योंकि यह पूरी जनसंख्या की तुलना में कम है। वर्ष 2001 में जहाँ जनजातीय लोगों की साक्षरता दर 37.37 प्रतिशत थी जो 2011 में बढ़कर 52.24 प्रतिशत हो गई। यह जनजातीय लोगों के शैक्षिक स्तर में उन्नति को दर्शाता है। 2001 से 2011 में पुरुष साक्षरता दर 51.5 प्रतिशत से बढ़कर 63.70 प्रतिशत हो गई। पूरी आबादी और जनजातीय लोगों की शैक्षिक स्थिति में 20.66 प्रतिशत का अंतर रहा। पिछले दशक में महिला साक्षरता दर में बहुत उन्नति के बावजूद चिंता का विषय बना रहा। महिला साक्षरता दर 2001 से 2011 के बीच 23.36 प्रतिशत से बढ़कर 41.20 प्रतिशत हो गई। साधारण आबादी की तुलना में जनजातीय महिलाओं की साक्षरता दर 22.8 प्रतिशत तक कम है (इकोनोमिक सर्वे

तालिका 1— साक्षरता संबंधी आँकड़े

जनजातीय वर्ग					साधारण वर्ग			
साल	पुरुष	महिला	लैंगिक भिन्नता	कुल संख्या	पुरुष	महिला	लैंगिक भिन्नता	कुल संख्या
1971	16.4	2.58	13.8	9.46	38.3	13.92	24.38	26.18
1981	28.3	5.81	22.51	17.01	47.09	21.12	25.97	35.37
1991	34.4	10.21	24.23	22.31	63.1	37.7	25.4	49.09
2001	51.5	23.36	28.14	37.37	75.95	50.5	25.45	63.08
2011	63.7	41.2	22.5	52.24	98.16	64	34.16	72.9

स्रोत— भारतीय जनगणना, 2011

ऑफ़ उड़ीसा 2016–17 पृ.सं. 257)। कक्षा प्रथम से पाँचवी तक कक्षाओं में जहाँ जनजातीय छात्रों का सकल नामांकन दर 107.8 है एवं छात्राओं का सकल नामांकन दर 105.7 होकर कुल अनुपात दर अधिक रहता है। वहीं कक्षा छठी से आठवीं तक आते-आते वहीं जनजातीय छात्रों की संख्या 95.4 और छात्राओं का 98.2 प्रतिशत तक घट जाता है (शिक्षा सांख्यिकी— एक अवलोकन 2018 पृ.सं. 33)। इससे पता चलता है जनजातीय छात्रों की विद्यालयों में भर्ती दर अन्य वर्गों की तुलना में सबसे ज्यादा तेज़ी से घट रही है। सभी वर्गों के छात्रों की तुलना में जनजातीय छात्राओं के विद्यालय छोड़ने की दर सबसे अधिक है। उड़ीसा में कक्षा प्रथम से दसवीं के बीच जनजातीय विद्यार्थियों का विद्यालय छोड़ने की वार्षिक औसत दर छात्रों 24.9 प्रतिशत और छात्राओं का 24.4 प्रतिशत है। (शिक्षा सांख्यिकी— एक अवलोकन 2018 पृ.सं. 37)। इससे स्पष्ट हो जाता है कि जनजातीय बच्चों में बहुत ही कम प्रतिशत बच्चों को उच्च शिक्षा पाने का अवसर प्राप्त होता है। उड़ीसा में जनजातीय छात्रों की एवं अन्य वर्गों की

लैंगिक समानता सूची जहाँ कक्षा प्रथम से पाँचवी में सबसे अधिक रहती है, वहीं कक्षा ग्यारहवीं-बारहवीं में आते-आते सबसे नीचे आ जाती है।

जनजातीय लोगों के लिए शैक्षणिक संस्थान

उड़ीसा के 314 ब्लॉक में से 118 ब्लॉक जनजातीय योजनाओं के तहत आते हैं (ओता, 2009)। जनजातीय बच्चों को शिक्षा प्रदान करने हेतु स्कूल व सामूहिक शिक्षा विभाग के अधीन कुल 56355 विद्यालय (प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक) चलाए जा रहे हैं (स्कूल व सामूहिक शिक्षा विभाग, उड़ीसा सरकार)। इतना ही नहीं अनुसूचित जाति एवं जनजातीय विभाग द्वारा भी जनजातीय बच्चों के लिए कुछ विद्यालय चलाए जा रहे हैं। इस विभाग के अधीन विद्यालयों की सूची तालिका 2 में प्रदत्त है।

उड़ीसा की जनजातीय शिक्षा की समस्याएँ

तालिका 2 में दिए गए आँकड़ों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि संवैधानिक गारंटी एवं लगातार प्रयास के बावजूद उड़ीसा के जनजातीय वर्ग के लोग शिक्षा के क्षेत्र में साधारण वर्ग से बहुत पीछे हैं। इसके प्रमुख कारणों को हम बाह्य, आंतरिक, सामाजिक, आर्थिक

तालिका 2— साक्षरता संबंधी आँकड़े

विद्यालय	संख्या
एकलव्य मॉडल स्कूल	19
उच्च माध्यमिक विद्यालय विज्ञान एवं वाणिज्य	62
उच्च विद्यालय	249
बालिका उच्च विद्यालय	173
आश्रम विद्यालय	705
माध्यमिक शिक्षण प्रशिक्षण विद्यालय	02
सेवाश्रम	501
बी.एड प्रशिक्षण कॉलेज	01
कुल	1712

स्रोत— अनुसूचित जाति एवं जनजातीय विकास विभाग वार्षिक विवरण 2019–20, पृ.सं. 19

एवं मानसिक प्रतिबंधक आदि भागों में बाँट सकते हैं (सुजाता, 2002)। बाह्य प्रतिबंधकों में योजना की रूपरेखा, योजना प्रणयन एवं प्रशासन आदि हैं जबकि आंतरिक प्रतिबंधकों में स्कूल एवं स्कूल संबंधी समस्या है, जैसे— स्कूल प्रणाली, पाठ्यक्रम, शैक्षिक अवलोकन एवं शिक्षक संबंधी प्रतिबंधक है। अन्य समस्या में जनजातीय लोगों की शैक्षिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं प्रथम पीढ़ी के पाठकों की मानसिक स्थिति को लिया गया है।

नीचे लिखे बिंदु जनजातीय लोगों की शिक्षा एवं शिक्षित पिछड़ेपन का मूल कारण हो सकते हैं।

- **आर्थिक कारण**— ज़्यादातर जनजातीय अभिभावक अपनी आर्थिक स्थिति के कारण बच्चों को विद्यालय भेजने में अनिच्छा प्रकट करते हैं क्योंकि वे अपने बच्चों को घर के रोज़गार का साधन मानते हैं।
- **विद्यालय के समय**— विद्यालय का समय एवं जनजातीय लोगों के काम करने का समय एक होता है। उनके बच्चे उन्हें आर्थिक दृष्टि से मदद करते हैं जिसके लिए वे उनका नाम विद्यालय में लिखना नहीं चाहते हैं। अगर लिखते भी हैं तो आधे समय से उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ता है।
- **भयंकर गरीबी**— भारत के अधिकांश जनजातीय लोग गरीब एवं बहुत पिछड़े हैं। ज़्यादातर कृषि पर निर्भर हैं या श्रमिक हैं इसलिए उनके बच्चे बाल भी मज़दूर बनने के लिए मजबूर होते हैं।
- **मानसिक दृष्टिकोण, अंधविश्वास एवं पूर्वधारणा**— जनजातीय अभिभावकों की मानसिक अवधारणा सदैव सांस्कृतिक एवं परंपरागत कार्यक्रमों के अनुकूल एवं बच्चों का परिवार के लिए रोज़गार सक्षम बनाने की ओर

झुकाव रहता है। ज़्यादातर लोगों में यह विचार है कि शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनके बच्चे विद्रोही, असभ्य एवं बाकी समाज से अलग बन जाते हैं और उनकी लड़कियाँ आधुनिक और गुमराह हो जाती हैं। कुछ जनजातीय लोगों का यह मानना है कि बाहरी लोगों द्वारा चलाए जाने वाली विद्यालयों में उनके बच्चों के पढ़ने से भगवान नाराज़ हो जाते हैं।

- **शिक्षण संबंधी समस्या**— जनजातीय इलाकों में उपयुक्त शिक्षकों की कमी शैक्षिक विकास में प्रमुख बाधक सिद्ध होती है। जनजातीय विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने हेतु नियुक्त अधिकतर शिक्षक उन लोगों की जीवन शैली एवं मूल्यबोधों को नज़रअंदाज़ कर कभी उनकी प्रशंसा नहीं करते हैं। वे लोग जनजातीय लोगों को जंगली एवं असभ्य मानकर स्वयं को बड़ा दिखाते हैं। इसलिए विद्यार्थियों के साथ उनका अच्छा तालमेल नहीं बन पाता है।
- **भाषायी माध्यम**— जनजातीय शिक्षा में प्रमुख बाधक भाषा ही है। अधिकतर जनजातीय भाषा या बोली अभी भी उसके मौलिक रूप में है, जिसका कोई लिखित रूप या साहित्य नहीं मिलता। अधिकांश प्रदेशों में साधारण वर्ग एवं जनजातीय वर्ग छात्रों को एक ही आंचलिक भाषा में पढ़ाया जाता है। मगर अधिकांशतः पाठ्य सामग्री आंचलिक भाषा में जनजातीय विद्यार्थियों को शिक्षा अरुचिपूर्ण लगती है। उन्हें स्कूली भाषा से जोड़ना ज़रूरी है ताकि वे उपलब्ध साहित्य या सामग्री को पढ़कर समझ सकें। कई बार शैक्षिक सत्र की शुरुआत से ही विद्यालयों में किताबें उपलब्ध नहीं हो पाती, जो छात्रों एवं शिक्षकों के लिए समस्या उत्पन्न करता है।

- **गाँव की स्थिति**— अधिकांश जनजातीय गाँव बिखरे हुए होते हैं। विद्यालय जाने के लिए बच्चों को कई मील पैदल जाना पड़ता है। जब तक विद्यालय उनके गाँव के पास नहीं होगा और गाँव वालों के द्वारा स्वामित्व स्वीकार्य नहीं होगा तब तक अच्छे फल की आशा नहीं की जा सकती। विद्यालय का मकान भी जनजातीय लोगों के शैक्षिक विकास में प्रमुख भूमिका निभाता है। कुशासन, कुप्रबंधन, आर्थिक घपला एवं आर्थिक कमी या बाधाओं के कारण कुछ विद्यालय के मकानों में शैक्षिक अनुष्ठान चलाना मुश्किल हो जाता है।
- **परिवेश या वातावरण**— ज्यादातर जनजातीय अभिभावक कृषक या श्रमिक होते हैं जिन्हें बाहरी आधुनिक दुनिया या परिवेश का कोई ज्ञान नहीं होता। उनका वातावरण संकीर्ण होता है जो संकीर्ण विचारधारा को जन्म देता है। ज्यादातर अभिभावक शराब या अन्य नशा करते हैं। इसका दुष्प्रभाव एवं कुपरिणाम बच्चों पर पड़ता है जिससे उनके परीक्षा परिणाम होते हैं।
- **सही निगरानी**— जनजातीय कल्याण विभाग एवं विद्यालय शिक्षा विभाग के मध्य सही निगरानी रखने की आवश्यकता है। कोई निश्चित स्वतंत्र एवं निरपेक्ष संस्थान का निर्माण किया जाना चाहिए जो इन कार्यों पर निगरानी रखें साथ ही कमियों को दूर कर भविष्य में सुधार की योजना बनाएँ।

जनजातीय इलाकों में शैक्षिक विकास के उपाय

- जनजातीय बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में देने की ज़रूरत है। जहाँ तक संभव हो शिक्षित जनजातीय युवाओं को उनके इलाकों में शिक्षक के रूप में नियुक्ति मिले। पाठ्यक्रमों में जनजातीय विकास हेतु उनके खेलों, तीरंदाजी, औषधीय वृक्षों की पहचान, शिल्प, कला, संस्कृति, जनजातीय नृत्य एवं संगीत और चित्रकला आदि को भी सम्मिलित किया जाए।
- शैक्षिक पाठ्यक्रम, पुस्तक एवं शैक्षिक उपकरणों को जनजातीय लोगों की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए बनाना चाहिए।
- जनजातीय इलाकों के विद्यालयों में पर्याप्त संख्या में नियमित शिक्षकों की भर्ती सुनिश्चित करनी चाहिए। आवश्यक संसाधनों तथा जनजातीय शिक्षकों को भी नियुक्ति देनी चाहिए। ऐसे शिक्षकों के अभाव में उन शिक्षकों की भर्ती की जाए जिनका जनजातीय लोगों के प्रति, उनके सांस्कृतिक, परंपराओं के प्रति झुकाव हो। ऐसे स्थानों में शिक्षकों को विद्यालय परिसर में रहने की सारी व्यवस्था करनी चाहिए। जनजातीय लोगों की आवश्यकता एवं माँग के आधार पर विद्यालयों का निर्माण करना चाहिए। समुदाय के प्रमुख उपदेशकों को स्वेच्छा से विद्यालय खोलने एवं प्रबंधन करने के लिए प्रोत्साहन मिलना चाहिए।
- विद्यालय की समय सारणी विद्यार्थियों की उपलब्धता तथा विद्यालय को अवकाश कैलेंडर भी उस समुदायों के पर्व-त्यौहारों को ध्यान में रखकर बनाना चाहिए।
- शैक्षिक कैलेंडर का निर्माण जनजातीय समुदाय के संस्कृति परंपरा के अनुसार होना चाहिए जो छुट्टियाँ उनसे संबंधित नहीं है उन्हें निकाल कर

उनके त्यौहारों में उन्हें छुट्टी देनी चाहिए जिससे विद्यालय की उपस्थान में उन्नति होगी, साथ ही उनकी गरिमा में वृद्धि होगी।

- जनजातीय माता-पिता को शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करने हेतु उन्हें सही परामर्श एवं मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है।
- पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के साधनों को भी जनजातीय भाषा में तैयार करने की जरूरत है। इसके लिए जनजातीय लोककथा, गीत, पहेलियों को संगृहीत करने के लिए विशेष व्यवस्था करनी चाहिए।
- जनजातीय इलाकों में विशेष समुदाय संगठन, समुदाय क्षमता निर्माण उपायों को विकसित करने की आवश्यकता है। शिक्षा क्षेत्र में अनुभवी स्वैच्छिक अनुष्ठानों के द्वारा क्षमता निर्माण, जन सचेतन एवं जन जागृति कार्यक्रमों को कराना चाहिए।

निष्कर्ष

पूरे विश्व में शिक्षा ही ऐसा साधन है जिससे व्यक्ति का सामाजिक एवं आर्थिक विकास हो सकता है। स्कूल एवं स्कूल संबंधी मौलिक संसाधन की कमी जनजातीय लोगों के शैक्षिक विकास में सर्वप्रमुख समस्या बन कर खड़ी है। संभवतः जनजातीय लोगों के सामूहिक विकास एवं उनकी शिक्षा के बारे में गंभीरता से सोचने का समय आ गया है। सरकारी हस्तक्षेप, योजना निर्माता उसे कार्यान्वित करने वाले सभी बुद्धिजीवियों को इन समस्याओं पर आपातकालीन विचार करके जनजातीय लोगों की शिक्षा के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों को अपने बजट में अधिक से अधिक अर्थ मुहैया करने की और ध्यान देना चाहिए। जनजातीय बच्चों को समाज के आर्थिक विकास के मुख्यधारा में सम्मिलित कर उन्हें अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है।

संदर्भ

- ए. बी. ओता. 2009. जनजातीय उपयोजना की समीक्षा. पृष्ठ 16, अनुसूचित जाति एवं जनजातीय आरटीआई भुवनेश्वर. उड़ीसा सरकार. 2016–17. *इकोनोमिक सर्वे ऑफ़ उड़ीसा*. उड़ीसा सरकार, भुवनेश्वर.
- उड़ीसा सरकार, मानव विकास रिपोर्ट. 2004. पृष्ठ 116. योजना व समन्वय विभाग. सरकार, भुवनेश्वर.
- . 2019–20. अनुसूचित जाति एवं जनजातीय वार्षिक विवरणी. अनुसूचित जाति एवं जनजातीय विभाग. उड़ीसा सरकार.
- . 2020. स्कूल एवं जन शिक्षा विभाग. <https://sme.odisha.gov.in/about-us/overview/primary-education>
- भारत सरकार. 2014. *स्कूली शिक्षा की सांख्यिकी 2013–14*. निगरानी एवं सांख्यिक विभाग. मानव संसाधन विकास, मंत्रालय नयी दिल्ली.
- . 2018. *शिक्षा सांख्यिकी—एक अवलोकन*. निगरानी एवं सांख्यिक विभाग. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/statistics-new/ESAG-2018.pdf पर देखा गया।
- . 2011. भारतीय जनगणना 2011. गृह मंत्रालय, नयी दिल्ली.

- . 2011. *भारतीय जनगणना 2011*. उड़ीसा का प्राइमरी सेंसस एब्सटैक्ट पृष्ठ 8, गृह मंत्रालय, नयी दिल्ली.
- विश्व बैंक. 2004. *भारतीय सहस्राब्दी विकास लक्ष्य तक पहुँच—सरकारी योजना एवं सेवा वितरण*. मानव विकास इकाई, साउथ एशियन रीजन, वाशिंगटन.
- सेदल एम. और के संगीता. 2008. *प्राथमिक शिक्षा में अनुसूचित जाति एवं जनजातीय की शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र में समानता*, नीपा, नयी दिल्ली.
- सेन. ए. 2007. *स्वतंत्रता है जैसे विकास*. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन.
- सुजाता, के. 2002. *जनजातीय लोगों में शिक्षा*. गोविंदा आर. (संकलित) *भारतीय शिक्षा रिपोर्ट—बुनियादी शिक्षा की रूपरेखा*. पृष्ठ 362. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली.